नमाज़ की
अहमियत और फ़ज़ीलत

35

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहमवाला है।

सारी तअरीफ़ें अल्लाहतआला के लिए हैं। जो सब जहानों का पालनहार है। हम उसी की तअरीफ़ करते हैं और उसी से मदद और माफ़ी चाहते हैं।अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्लल लाहु अलैहि व सल्लम पर और आप की आल औ औलाद और असहाब रज़ि. पर। अम्मा बअद!

नमाज़ मोमिन की आंखों की ठन्डक और दिल का सुकून है। कोई मुसलमान जब दुनिया की परेशानियों और गमों से निढ़ाल होकर नमाज़ के लिए अल्लाह के सामने खड़ा होता है तो ग़मो और परेशानियों का बोझ हल्का हो जाता है और उस शख़्स को हक़ीक़ी सुकून मिलता है। नमाज़ दीने इस्लाम का एक सुतून है और यह हर मुकल्लिफ़ मुसलमान पर फ़र्ज़ है। नमाज दीन का इतना अहम रूक्न है कि इसे नबी सल्ल. को आसमानों से ऊपर बुलाकर कलमा पढ़ने वाले हज़रात के लिए फ़र्ज किया गया। मेअराज का वाक़िआ बयान करते हुए आप सल्ल. ने फरमाया'' अल्लाह ने हर दिन व रात में पहले 50 नमाज़ें फ़र्ज़ की थी। फिर मै मूसा अलैहि. की तरफ़ उतरा तो उन्होंने पूछा–आपके रब ने क्या फ़र्ज़ किया है? मैंने कहा–50 नमाज़ें/ वह बोले–आप अपने रब की तरफ़ वापिस लौटिये और इनमें कमी करने की गुज़ारिश कीजिए। मैं अपने रब की तरफ़ वापिस लौटा और नमाज़ों में कमी का सवाल किया तो अल्लाह ने 10 नमाजे़ कम कर दी। फिर मैं मूसा अलैहि.की तरफ़ वापिस हुआ और उन्हें बताया तो वह बोले–आप वापिस जाईये और कमी की इल्तेजा कीजिए। चुंनाचे मैं अपने रब और मूसा अलैहि. की तरफ़ आता–जाता रहा । यहां तक कि अल्लाह–तआला ने फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्ल.) ये दिन रात में 5 नमाज़ें हैं और हर नमाज़ के लिए 10(नमाज़ों का सवाब) है। इस तरह सवाब के लिहाज़ से ये 50 ही हैं। (बुखारी–7517मुस्लिम–162)

नमाज़ की अहमियत

अल्लाह तआला ने अपने कलामे पाक में नमाज़ का ज़िक्र कई मक़ामात पर और अलग–अलग अन्दाज में किया है और ईमान वालों को इसके पढने का हुक्म दिया है। जैसे–

(1) '' नमाज़ क़ायम करो और जक़ात देते रहो और रूकू करने वालों के साथ रूकू किया करो।'' (बक़रा–आयत–43)

(2) '' उन्हे (लोगों को) इसी बात का हुक्म दिया गया है कि वोह सिर्फ (एक) अल्लाह की इबादत करें और शिर्क से बचते हुए अल्लाह के लिए दीन को खालिस रखें। नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें। यही सीधी मिल्लत का दीन है।''(बय्यनः– आयत–5)

(3) '' अपनी नमाज़ो की हिफ़ाजत करो। खास कर दर्मियानी नमाज़ की और अल्लाह के सामने अदब से खड़े हुआ करो।''(बक़राः–आयत–238)

(4) '' अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दीजिए और खुद भी उस पर जम (डट) जाइये।''(ताहा–आयत–132)

(5) '' नमाज़ अदा करने वाले जो हमेशा पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं और जो अपनी नमाज़ो की हिफ़ाजत करते हैं। यही लोग इज़्ज़त के साथ जन्नत में रहेगें।'' (मआरिज–आयत–23'34'35)

(6) '' ईमान वाले कामयांब हो गये जो नमाज़ में आजिज़ी करते हैं। बेहूदा बातों से दूर रहते हैं।जो ज़कात अदा करते हैं और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।'' (मुअमिनून–आयत–1से 5)

(7) '' जो लोग ईमान लाए और फिर अच्छे अमल किये। नमाज़ क़ायम करते रहे और ज़कात अदा करते रहे। उनका अज्र उनके रब के पास है। उन्हें न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह ग़मगीन होंगे।'' (बकरा–आयत–277)

(8) '' सच्चे ईमान वाले तो वोह हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाये तो उनके दिल कांप उठते है और जब उन्हें अल्लाह की आयात सुनाई जाती हैं तो उनका ईमान बढ़ जाता है। वोह अपने रब पर भरोसा करते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं।''(अन्फ़ाल–आयत–2–3)

(9) '' जो लोग गैब पर ईमान लाते हैं नमाज़ क़ायम करते हैं और हमने जो उन्हें दिया है उसमें से (अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं। आसमानी किताबों और क़यामत के दिन पर यकीन रखते हैं। ऐसे ही लोग हिदायत पर हैं और कायमयाबी पाने वाले हैं।''(बक़रा–आयत–3 से 5)

(10)'' अल्लाह तुम्हारे ईमान (नमाज़) को ज़ाया नहीं करेगा। '' (बकरा–आयत–143)

नमाज़ की अहमियत पर कुरआन में और भी बहुत सी आयात हैं। अरकाने इस्लाम में नमाज़ ही वह रूक्न है जिसका ज़िक अल्लाह तआला ने सबसे ज़्यादा किया है। लिहाजा हम मुस्लमानों को इसका सबसे ज्यादा एहतेमाम करना चाहिये। नमाज़ की अहमियत पर अल्लाह के रसूल सल्ल. के भी काफ़ी इर्शादात हैं।

मिसाल के तौर पर –

(1) '' दीने इस्लाम की बुनियाद 5 चीज़ों पर हैं – (1) इस बात की गवाही देना कि अल्लाह ही (अकेला) हक़ीक़ी मअबूद है और मुहम्मद सल्ल. उसके बन्दे और रसूल हैं (2) नमाज़ कायम करना (3) ज़कात अदा करना (4) बैतुल्लाह का हज करना और (5) माहे रमज़ान के रोजे रखना। '' (बुखारी–08 मुस्लिम –11 इब्नेउमर रज़ि.)

(2) जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि. का बयान है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल. से इस बात पर बैअत की कि मैं हमेशा नमाज़ क़ायम करूंगा' ज़कात देता रहूंगा। और हर मुसलमान से ख़ैर ख़्वाही करूंगा।'' (बुखारी –524 मुस्लिम – 56)

(3) उम्मे सल्मा रजि. का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. अपनी उस बीमारी में जिसमें आप सल्ल. का इन्तेक़ाल हुआ। बार – बार यह फ़रमाते रहे '' नमाज़ हमेशा पढ़ते रहना और अपने गुलामों के हुकूक़ अदा करते रहना।'' यहां तक कि आप की ज़ुबान पर इन (कलमात) का जारी होना मुश्किल हो गया। (इब्ने माजा–1625–सही)

(4) अली रज़ि. का बयान है कि आप सल्ल. का आख़िरी कलाम यह था कि '' नमाज़ का ख़्याल रखना और गुलामों के हुक़ूक़ अदा करते रहना।'' (इब्ने माजा–2698– सही)

(5) तल्हा बिन उबैदुल्लाह रज़ि. ने बयान किया कि नजद का एक शख़्स जिसके बाल बिखरे हुए थे आप सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और जब क़रीब हुआ तो उसने अचानक इस्लाम के बारे में सवाल किया। अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया '' हर रोज़ (दिन –रात) में 5 (वक्त) नमाजें अदा करना हैं।'' उसने कहा – इनके अलावा कोई और भी नमाज़ है? आप सल्ल. ने फ़रमाया'' नही! मगर यह कि '' तुम नफ़िल नमाज़ पढ़ो। '' फिर आप सल्ल. ने फ़रमाया'' और माहेरमज़ान के रोजे भी रखना हैं। उसने कहा – क्या इनके अलावा भी कोई रोजे फ़र्ज़ हैं? आप सल्ल. ने फ़रमाया '' नहीं ! यह कि तुम नफ़ली रोज़े रखों। '' फिर आप सल्ल. ने उसे ज़कात की फ़रजीयत के बारे में बतलाया तो उसने कहा – क्या इसके अलावा कोई और चीज़ भी (माल में) फ़र्ज़ है? तो आप सल्ल. ने फ़रमाया '' नहीं ! मगर यह कि तुम नफ़ली सदका करों !'' इसके बाद उस शख़्स ने लौटते हुए कहा ' अल्लाह की कसम ! मैं न इससे ज़्यादा करूंगा और न इससे कम करूंगा !' यह सुनकर आप सल्ल. ने फ़रमाया '' अगर हक़ीक़त में इसने ऐसा ही किया तो कामयाब हो जायेगा।'' (बुखारी – 46, मुस्लिम – 11– अबुदाऊद – 391) मगर ! अफ़सोस ! आज बहुत सारे लोग जो अपनी निस्बत इस्लाम की तरफ़ करते है, वो शहादतैन के बाद इस सबसे अहम फ़रीज़े ही से ग़ाफ़िल हैं। न खुद इस की परवाह करते हैं और न अपनी औलाद को इसका पाबन्द बनाने की कोशिश करतें हैं। हालांकि अल्लाह के रसूल सल्ल. का फ़रमान है–

(6) ''तुम्हारे बच्चे जब सात साल के हो जाएं तो उन्हें नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो और जब वोह दस साल के हो जाएं तो (नमाज़ न पढ़ने पर) उन्हें सज़ा दो।'' (अबुदाऊद – 494–95–हसन मुसनद अहमद–सही–जिल्द 2 सफ़ा –180)

(7) उबादा बिन सामित रजि. ने बयान किया कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया '' पांच नमाजे़ अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर फ़र्ज की हैं। लिहाज़ा जो शख़्स इन्हे इस तरह अदा करे कि उसने इनमें से किसी नमाज़ को हल्का समझ कर ज़ाया न किया हो तो उसके लिए अल्लाह का वादा है कि वह उसे ज़रूर जन्नत में दाख़िल करेगा और जो शख़्स इन्हें (पाबन्दी से) अदा नहीं करेंगा उसके लिए अल्लाह का कोई वादा नहीं। अगर अल्लाह चाहेगा तो उसे अज़ाब देगा और चाहेगा तो उसे जन्नत में दाख़िल कर देगा।'' (अबुदाऊद – 1420, नसाई – 464 सही)

(8) मआज़ रजि. की बयान कर्दा हदीस में हैं कि आप सल्ल. ने फ़रमाया '' मामले (दीन) की

जड़ इस्लाम है। उसका सुतून नमाज़ है और उसकी चोटी जिहाद हैं। '' (इब्नेमाजा –3973 तिर्मिज़ी –2616 –हसन)

(9) अनस रज़ि. का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया '' क़यामत के दिन बन्दे से सबसे पहले नमाज़ का हिसाब लिया जायेगा। अगर नमाज़ दुरूस्त निकलीं तो बाक़ी सब आमाल भी सही निकलेंगे और अगर नमाज़ ख़राब निकली तो बाकी तमाम आमाल भी ख़राब निकलेंगे।'' एक दूसरी रिवायत में इस तरह है– '' उसकी नमाज़ में देखा जायेगा। अगर वह ठीक हुई तो वह कामयाब हो जायेगा और अगर वह (नमाज़) दुरूस्त न हुई तो वह ज़लील व ख़्वार और नुक्सान उठाने वालों में होगा।'' (तबरानी – सही –अलबानी –1358)

नमाज़ के फ़ज़ाइल

(1) **बे – हयाई और बुरे कामों से रोकती है** – फ़रमानें बारी तआला है– '' नमाज़ कायम कीजिए। नमाज़ यक़ीनन बे हयाई और बुरे कामों से रोकती है। और अल्लाह का ज़िक्र तो बड़ी चीज़ है।'' (अन्कबूत – आयत–45)

(2) **शहादतैन के बाद सबसे अफ़ज़ल अमल है–** अब्दुल्लाह इब्ने मसउद रजि, बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल. से सवाल किया कि अल्लाह को सबसे ज़्यादा कौन सा अमल पसन्द है? तो आप सल्ल. ने फ़रमाया '' वक़्त पर नमाज़ अदा करना। '' मैंने पूछा फिर कौन सा? तो आप सल्ल. ने फ़रमाया '' वाल्दैन से नेकी करना।'' फिर उसके बाद '' अल्लाह की राह में जिहाद करना।'' (बुखारी –5970 मुस्लिम –85)

(3) **छोटे गुनाहों का कफ़्फ़ारा है–**

(A) अबुहुरैरा रज़ि. का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया '' भला बताओ अगर तुम में से किसी शख़्स के दरवाजे पर नहर बहती हो और वह उसमें रोज़ाना पांच दफ़ा गुसल करे तो क्या उसके जिस्म पर मैल –कुचैल बाक़ी रहेगा? '' सहाबा रज़ि. ने कहा – नहीं ! ज़रा भी नहीं रहेगा। फिर आप सल्ल. ने फ़रमाया ''यही पांच नमाज़ों की मिसाल है। अल्लाह इनकी वजह से (सग़ीरा) गुनाहों को मिटा देता है।''(बुखारी 528 – मुस्लिम – 1112)

(B) अबुहुरैरा रज़ि. ही से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया '' पांच नमाजें एक जुमा दूसरे जुमे तक और एक माहे रमज़ान दूसरे माहे रमज़ान तक इस बीच होने वाले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं ब शर्ते कि बड़े गुनाहों से बचा जाए।'' (मुस्लिम –233)

(C) उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि. का बयान है कि नबी सल्ल्. ने फ़रमाया '' जब किसी (फ़र्ज़) नमाज़ का वक़्त शुरू हो जाए। फिर मुसलमान उसके लिए अच्छी तरह से वुज़ू करे और नमाज़ में खुशूअ व खुज़ूअ इख़्तियार करे। फिर रूकूअ पूरे इत्मीनान से करे तो नमाज़ उसके लिए गुनाहों का कफ़्फ़ारा होती है। शर्त यह है कि वह बड़े गुनाहों से बचे और यह फ़ज़ीलत क़यामत तक के लिए है।'' (मुस्लिम –228)

(D) सलमान फ़ारसी रज़ि. का बयान है कि आप सल्ल्. ने फ़रमाया –'' बेशक ! एक मुसलमान जब नमाज़ शुरू करता है तो उसके गुनाह उसके सर पर बुलन्द कर दिये जाते हैं। फिर जब वह सज्दा करता है तो हर सज्दे के साथ उसके गुनाह झड़ने लगते हैं और जब वह नमाज़ से फ़ारिग होता है तो उसके तमाम गुनाह गिर चुके होते हैं। (तबरानी – सही –तरग़ीब व तरहीब – 362)

(E) अनस बिन मालिक रज़ि. ने बयान किया कि मैं नबी सल्ल्. के पास बैठा था कि एक आदमी ने आकर कहा – ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल्.! मैंने एक ऐसा गुनाह किया है जिस पर हद (सज़ा) वाजिब होती हैं। लिहाज़ा आप सल्ल् मुझ पर वह (हद) नाफ़िज़ करें। तो आप सल्ल्. ने उससे उसके गुनाह के बारे में कुछ न पूछा। बाद में जब नमाज़ का वक़्त हुआ तो उसने भी नबी सल्ल्. के साथ नमाज़ अदा की। नमाज़ के बाद फिर उसने आप सल्ल्. से वही बात कही। तब आप सल्ल्. ने फ़रमाया क्या तुमने हमारे साथ नमाज़ नहीं पढ़ी? वह बोला जी हां पढ़ी है। तो आप सल्ल्. ने फ़रमाया '' जाओ अल्लाह ने तुम्हारा गुनाह माफ़ कर दिया है।'' (बुखारी – 6823 ए मुस्लिम – 2765)

(4) नमाज़ी के लिए नूर का सबब होती है–

(A) अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि. का बयान है कि नमाज़ का जिक्र करते हुए एक दिन आप सल्ल. ने फ़रमाया '' जो शख़्स नमाज़ों का पाबन्द रहता है तो नमाज़ उसके लिए नूर दलील और क़यामत के दिन निजात का ज़रिया होगी और जो शख़्स नमाज़ हमेशा न पढ़े तो वोह उसके लिए न नूर होती है और न ही रोजे क़यामत उसके लिए निजात का सबब बनेगी। ऐसा

शख़्स क़यामत के दिन क़ारून फ़िरऔन, हामान और अबि बिन ख़लफ़ (जैसे बदनसीबों) के साथ होगा। '' (मुसनद अहमद – जिल्द–2 सफ़ा 169 – सही)

(B) बुरैदह रज़ि. का बयान है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया '' अन्धेरे में मस्जिद की तरफ़ चल कर जाने वालों को खुश खबरी है कि उन्हें क़यामत के दिन मुकम्मल नूर नसीब होगा। '' (अबुदाऊद – 561 – सही)

(C) उसमान रज़ि. का बयान है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया '' जो शख़्स इशा की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़े उसको आधी रात क़याम करने का सवाब है और जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ भी जमाअत के साथ अदा करे उसे पूरी रात क़याम करने का सवाब है।'' (दारमी – 1264, मुस्लिम – 656, अबुदाऊद – 555 –सही)

(5) नमाज़ के लिए चलकर जाने पर हर क़दम पर गुनाह माफ़ होते हैं –

अबुहुरैरा रज़ि. का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया '' जो शख्स अपने घर में वुज़ू करे। फिर अल्लाह के घरों में से किसी घर की तरफ़ जाए और उसका मक़सद सिर्फ़ अल्लाह के फ़रा इज़ में से एक फ़रीज़े (नमाज़) को अदा करना हो तो उसके दो क़दमों में से एक क़दम गुनाह को मिटाता है और दूसरा क़दम एक दर्जा बुलन्द करता है। '' (मुस्लिम – 666)

(6) नमाज़ के लिए निकलने पर जन्नत में मेहमान नवाज़ी तैयार की जाती है –

अबुहुरैरा रज़ि. बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया '' जो शख़्स सुबह के वक्त या शाम के वक्त मस्जिद में जाए तो अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में मेहमान नवाज़ी तैयार करता है। वह जब भी जाए सुबह को या शाम को। '' (बुख़ारी –662 , मुस्लिम – 669)

(7)नमाज़ी के लिए फ़रिश्ते भी दुआ करते हैं –

अबुहुरैरा रज़ि. ने बयान किया कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया'' आदमी की जमाअत के साथ नमाज़ का सवाब बीस (20) से ज़्यादा गुना बढ़ जाता है जिसे वह घर में या बाज़ार में अकेले पढ़े। यह इस तरह कि जब कोई शख़्स अच्छी तरह से वुज़ू करे। फिर मस्जिद मे सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने की नीयत से आए। नमाज़ के अलावा उसका कोई और मक़सद न हो तो उसके हर एक क़दम पर उसका एक दर्ज़ा बुलन्द होता है और एक गुनाह मिटा दिया जाता है। यहां तक कि वह मस्जिद में दाख़िल हो जाए। फिर जब वह मस्जिद में पहुंच जाता है तो जब तक वह नमाज़ के इन्तेज़ार मे बैठा रहता है , फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं। फ़रिश्ते कहते हैं '' ऐ अल्लाह ! इस पर रहम फ़रमा , इसकी मग़फ़िरत फ़रमा और इसकी तौबा क़ुबूल कर। वोह लगातार इसी तरह दुआ करते रहते हैं जब तक वह (शख़्स) किसी को तक्लीफ़ न दे या उसका वुज़ू टूट न जाए। '' (बुख़ारी –2119 , मुस्लिम – 1100)

(8) **नमाज़ी को उस हाजी का सवाब मिलता है जो एहराम बांधे हुऐ हो** – अबु उमामा रज़ि. का बयान है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया '' जो शख़्स अपने घर से बा वुज़ू होकर फ़र्ज़ नमाज़ के लिए जाता है तो उसका सवाब उस हाजी का सा होता है जिसने एहराम बांधा हुआ हो। '' (अबुदाऊद – 558 – हसन)

(9) **नमाज़ गुनाहों की आग को बुझाती है** – अनस बिन मालिक रज़ि. ने बयान किया कि आप सल्ल. ने फ़रमाया '' बेशक ! अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है जो हर नमाज़ के वक्त पुकार कर कहता है '' ऐ आदम की औलाद ! खड़े हो जाओ और अपनी उस आग को बुझादो जो तुमने (अपने गुनाहों – की वजह से) जलाई है। '' (तबरानी – तर्ग़ीब व तर्हीब – 358 हसन)

(10) पाचों नमाज़ें पाबन्दी से पढ़ने वाला शख़्स सिदीक़ीन व शुहदा में से है

अम्र बिन मुर्रा अल जहनी रज़ि. ने बयान किया कि एक शख़्स ने आप सल्ल. के पास आकर अर्ज़ किंया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल. ! आपका क्या ख़्याल हैं? अगर मैं इस बात की गवाही दूँ कि अल्लाह के सिवाए कोई मअबूदे बरहक़ नहीं और आप अल्लाह के रसूल हैं। इसके अलावा मैं पांचों नमाजें पढ़ता रहूँ और उसकी रातों में क़याम भी किया करूं तो मैं किन लोगों में से हूंगा? आप सल्ल. ने फ़रमाया '' तुम सिद्दीक़ीन और शुहदा में से होगें। '' (बज़्ज़ार , इब्ने ख़ुज़ैमा , सही तर्ग़ीब व तर्हीब – 361)

(11) **नमाज़ आंखो की ठन्डक है–** अनस रज़ि. ने बयान किया कि आप सल्ल. ने फ़रमाया '' मुझे दुनिया की दो चीजें (ज़्यादा) प्यारी हैं (1) औरतें (2) ख़ुश्बू और मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ में है। '' (नसाई – 3394 , मुसनद अहमद – हसन – अल बानी)

नमाज़ों का तर्क करना –

नमाज् का छोड़ना तो दूर इसकी अदायगी में सुस्ती करना या वक्त टाल कर अदा करना ही बड़ा गुनाह है तो नमाज् को बिल्कुल छोड़े रहना या न पढ़ना कितना संगीन गुनाह होगा इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है। इस गुनाह में मुब्तेला रहने वालों के बारे में इर्शादे बारी तआला है – '' फिर उनके बाद उनकी नालायक़ औलाद उनकी जानशीन बनी। जिन्होंने नमाज् को जाया किया और ख्वाहिशात के पीछे लग गये। वो जल्दी ही हलाकत में पड़ेंगे और गई में जगह पायेंगे। '' (मरयम – आयत – 59)

इब्ने मसऊद रजि़. का बयान है कि '' गई जहन्नम में एक दरिया है जिसका ज़ायका बहुत गन्दा और गहराई बहुत ज़्यादा है। '' (किताबुस्सलात – इब्नेक़य्यिम – सफ़ा– 40)

नमाज में गफ़लत – '' ऐसे नमाज़ियों के लिए भी हलाकत है जो अपनी नमाज् से ग़ाफ़िल रहते हैं। '' (माऊन – आयत –4,5) (यानि वक्त पर अदा नहीं करते या नमाज् में सुस्ती करते हैं)

कयामत के दिन बे नमाज़ियों का अन्जाम – '' कयामत के दिन जन्नती (जिन्हें जन्नत का परवाना मिल गया होगा) मुजरिमों से पूछेंगे कि आग (जहन्नम) में तुम लोग किस वजह से दाख़िल हुए तो वो जवाब देंगे – हम नमाज् अदा करने वालों में न थे। '' (मुदस्सर – आयत – 40 से 43)

नमाज़ में सुस्ती करना मुनाफ़िक़त की अलामत है – '' ये मुनाफ़िक़ अल्लाह से धोखे बाजी करते हैं। जबकि अल्लाह ही उन्हें धोखे का बदला देने वाला है। जब वोह नमाज् के लिए खड़े होते हैं तो बड़ी काहिली से। (वह भी) सिर्फ़ लोगों को दिखलाने के लिए और अल्लाह को कम ही याद करते हैं। '' (निसा –आयत – 142)

नमाज़ जान बूझ कर छोड़ना – नमाज् को जान बूझ कर छोड़े रहना बहुत बड़ा गुनाह बल्कि कुफ् है जैसा के आप सल्ल. फ़रमाया ''आदमी'' और कुफ्र के दर्मियान फ़र्क नमाज् को छोड़ना है। '' (अबुदाऊद – 4678 –मुस्लिम नसाई – 467) तो एक और रिवायत में है – कुफ् और ईमान के बीच फ़र्क नमाज् को छोड़ना है। '' (तिर्मिज़ी – 2409 – सही) उसी तरह अबुमूसा रजि़. की बयान कर्दा हदीस में है कि आप सल्ल. ने फ़रमाया '' हमारे और इन (ईमान न लाने वालों) के बीच अहद नमाज् है। लिहाज़ा जो शख़्स नमाज् पढ़ना छोड़ दे। उसने यक़ीनन कुफ़् किया। '' (इब्ने माजा – 1079 , तिर्मिज़ी – 2621 –सही)

अब्दुल्लाह बिन शफ़ीक़ रजि़. का बयान है कि '' मुहम्मद सल्ल. के सहाबा (रजि़.) आमाल में से किसी अमल के छोड़ने को कुफ़् नही समझते थे, सिवाए नमाज् के। '' (तिर्मिज़ी – 2410 , हाकिम – सही)

इमाम मुन्ज़री रह. कहते हैं कि '' सहाबा किराम रजि़. और उनके बाद आने वाले सल्फ़ सालेहीन की एक जमाअत का मौक़फ़ यह है कि एक नमाज् को जान बूझकर छोड़ने वाला शख़्स यहां तक कि उसका वक्त निकल जाए, काफ़िर हैं। यह राय रखने वालों में उमर रजि़. , इब्ने मसऊद रजि़. , इब्ने अब्बास रजि़. , मआज् रजि़. , जाबिर रजि. , अबुदर्दा रजि़. और इमाम अहमद इब्ने हम्बल रह. , इमाम इसहाक़ बिन राहुया रह.अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह. , इब्राहीम नखई रह. , हकम बिन अतीबा रह. , अययुब सख़्तयानी रह. , अबुदाऊद तियालिसी रह. , ज़हीर बिन हर्ब रह. और इब्ने अबि शैबा रह. क़ाबिले ज़िक्र हैं।'' (तर्ग़ीब व तर्हीब – जिल्द 1 सफा– 386) मआज् बिन जबल रजि़. का बयान है कि एक शख़्स से आप सल्ल. ने फ़रमाया '' तुम अल्लाह के साथ कभी शिर्क न करना। अगर चे तुम्हें अज़ाब दिया जाए या जला दिया जाए। वाल्दैन की फ़रमाबरदारी करते रहना चाहे वोह तुम्हें तुम्हारे माल से और तुम्हारी हर चीज् से निकाल दें। कभी जान बूझ कर नमाज् मत छोड़ना क्योंकि जो शख़्स क़सदन नमाज् छोड़ता है, उससे अल्लाह बरीउज् जिम्मा हो जाता है। '' (तबरानी – सही – तर्ग़ीब व तर्हीब – 569)

इमाम इब्ने क़यियम रह. कहते हैं कि '' मुसलमानों में इस बात में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि जान बूझ कर फ़र्ज् नमाज् को छोड़ना कबीरा गुनाहों में से है और यह गुनाह अल्लाह के नज़दीक क़त्ल करने , माल लूटने , बदकारी करने और शराब पीने से भी बड़ा है। नमाज् का छोड़ने वाला अल्लाह की नाराज़गी व सज़ा और दुनिया व आख़िरत में रूसवाई की ज़द में है। उमर रजि़. अपने सब उम्माल (गवर्नरों) को लिखा करते थे कि मेरे नज़दीक तुम्हारा सबसे अहम काम नमाज् (क़ायम करना) है क्योंकि जो इसकी हिफ़ाज़त करता है वह अपने दीन को महफ़ूज कर लेता है और जो इसे ज़ाया कर दे वह इसके अलावा बाक़ी फ़राइज् ए इस्लाम को ज़्यादा ज़ाया करने वाला है। यह भी कि जो शख़्स नमाज् छोड़ दे , उसका इस्लाम में कोई

हिस्सा नहीं। '' (किताबुस्सलात – अज् – इब्ने क़य्यिम – सफ़ा – 21 – 22)

आज जब हम आम मुसलमानों के हालात का जायेज़ा लेते हैं तो लगता है कि बहुत से मुसलमान तो इस दीनी फ़रीज़े से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं। ऐसे लोग यकीनन इन्तेहाई पुर खतर डगर पर हैं। ऐसे लोग जो बिल्कुल ग़ाफ़िल तो नहीं मगर नमाज़ अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ अदा करते हैं। कभी पांचों नमाज़े पढ़ लेते हैं तो कभी कोई पढ़ी , कोई छोड़ देते हैं। कभी वक्त पर पढ़ते हैं तो कभी बे वक्त अदा करते हैं। कभी मसजिद में जाकर बा जमाअत पढ़ते हैं तो कभी बिना किसी शरई उज़्र के अपने घर ही में पढ़ लेते हैं। अक्सर मुसलमान तरीक़ा ए नमाज़ में भी इख़्तिलाफ़ के शिकार हैं। जबकि आप सल्ल. का फ़रमान है '' नमाज़ उस तरह पढ़ो , जैसे मुझे नमाज़ पढ़ते देखते हो। '' (बुखारी – 631 , अबुदाऊद – 823)

यह भी देखा जाता है कि बहुत से मुसलमान बाक़ी नमाजें तो वक्त पर अदा करते हैं लेकिन
उन की फ़ज्र की नमाज़ बिस्तर पर ही ज़ाया हो जाती है। अबुमूसा अशअरी रज़ि. की बयान कर्दा हदीस में है कि '' जो शख़्स दो ठण्डी नमाजें (फ़ज्र व अस्र) पढ़ता रहे। वह जन्नत में दाख़िल – होगा। '' (बुख़ारी – 574 , मुस्लिम – 635)

एक और हदीस में है कि '' वह शख़्स जहन्नम मे हरगिज़ दाख़िल नहीं होगा जो सूरज निकलने से पहले और सूरज के डूबने से पहले नमाज़ पढ़ता रहे '' (यानि फ़ज्र और अस्र की नमाजें पाबन्दी से पढ़ता रहे) (मुस्लिम – 634)

और यह कि '' जिस शख़्स की नमाज़े अस्र फ़ोत हो जाए। गोया उससे उसके घर वालों और उसके माल को छीन लिया गया। '' (बुख़ारी – 552 , मुस्लिम – 626)
एक और रिवायत में है कि '' जो शख़्स अस्र की नमाज़ छोड़ दे। उसके सारे आमाल ज़ाया हो जाते हैं। '' (बुख़ारी – 553)

कुछ लोग नमाज़े इशा और फ़ज्र में ग़फ़लत करते हैं। जबकि नबी सल्ल. का इर्शाद है '' बेशक! मुनाफ़िक़ों पर सबसे भारी नमाज़ नमाज़े इशा और नमाज़े फ़ज्र है। अगर उन्हें मालूम हो जाता कि इन दोनों में कितना अज्र (सवाब) है तो घुटनों के बल चल कर भी यह नमाजें अदा करने के लिए हाज़िर होते। '' (इब्ने माजा – 790 दारमी – 1310 , अबुदाऊद – 554 , नसाई – 846 – सही) किसी को अपना नमाज़ी होना दिखलाने या जताने के लिए भी नमाज़ पढ़ना गलती हैं। इसलिए कि आप सल्ल्. का इर्शाद है '' शिर्क खफ़ी दज्जाल से भी ज़्यादा खतरनाक है और वह यह है कि एक आदमी नमाज़ में हो और वह नमाज़ को इसलिए लम्बा कर दे कि कोई उसे देख रहा है।'' (इब्ने माजा – 3389)और यह कि'' जिसने दिखावे की नमाज़ पढ़ी, उसने शिर्क किया।'' (मुसनद अहमद – हसन, तर्गीब व तर्हीब – 43)
'' अपनी हयाते तय्यबा के आखिरी दिनों में जब तेज़ बुख़ार की वजह से आप सल्ल्ल पर गुनूदगी तारी थी। इशा के वक्त आंख खुलने पर सबसे पहले यही पूछा कि क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली है? अर्ज़ किया गया नहीं। आप सल्ल. ही का इन्तेज़ार है। आप सल्ल्. ने उठना चाहा तो फिर बेहोश हो गये। फिर जब होश आया तो यही सवाल किया कि क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली है? सहाबा किराम ने अर्ज़ किया – नहीं। आप सल्ल. का ही इन्तेज़ार है। उठने की कोशिश में आप पर फिर बेहोशी तारी हो गई। होश में आने पर आप ,सल्ल. ने फ़रमाया'' अबुबकर (रज़ि.) नमाज़ पढ़ायें।'' (दारमी – 1297, बुख़ारी – 687)

चूंकि आप सल्ल. नमाज़ के बारे में अपने आख़िरी वक्त तक फ़िक्र मन्द रहे। लिहाज़ा ईमान वालों के शायाने शान नहीं कि वोह नमाज़ों में सुस्ती करें। बल्कि उन्हें नमाज़ को अल्लाह का कुर्ब हासिल करने का ज़रिया और अपने लिए बाइसे निजात समझकर इनकी पाबन्दी से अदायगी करना चाहिये। इर्शादे बारी तआला है'' तुम सब्र और नमाज़ के ज़रिये अल्लाह से मदद तलब करो। बिला शुब्हा यह नमाज़ भारी है मगर आजिजी करने वालों पर जो इस बात का यक़ीन रखते हैं कि वोह अपने रब से मिलने वाले हैं और उन्हें उसी की तरफ़ लौटना है।'' (बक़रा – आयत – 45 – 46)

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें और हमारे घर वालों को नबी सल्ल. के सिखलाए तरीक़े के मुताबिक़ पांचों नमाजें अदा करने वाला बना दे और हमारी नमाज़ों को शर्फ़े कुबूलियत अता फ़रमायए।

आमीन या रब्बल आलामीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
Email: saeed.tonk@gmail.com
मो.09887239649, 09214836639

माखूज़
ज़ादुल खतीब
अज़ हाफिज़ मोहम्मद इस्हाक़ ज़ाहिद